मॉरीशस में हिंदी प्रचार-प्रसार : संस्थाएँ व गतिविधियाँ

श्री राजनारायण गति

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में, वैश्विक धरातल पर, हिंदी को लेकर गहन चिंतन की आवश्यकता है। परिस्थितियाँ बदल रही हैं, नई-नई चुनौतियाँ सामने आ रही हैं और लोगों के दृष्टिकोण में भी अंतर आ रहा है। इन सब बातों पर अनेकानेक सम्मेलनों में विस्तारपूर्वक चर्चाएँ तो हुई हैं परन्तु, प्रश्न वहीं आकर ठहर जाता है कि इन मुद्दों के सामने कौन कितना कट्टिबद्ध है?

भारत तो हिंदी का अथाह सागर है। वहाँ भी समस्याएँ अपनी जगह हैं लेकिन, साधन व संभावनाएँ भिन्न हैं। भारत से बाहर वातावरण अलग ही है। फिर भी, हिंदी के उन्नयन की दिशा में विभिन्न स्तरों पर अद्‌भुत कार्य हो रहा है। प्रवासियों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। उपनिवेश काल में जो भारतीय गिरमिटिया मज़दूर दक्षिण-अफ्रिका, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गयाना इत्यादि देशों में ले जाए गए थे और दूसरा जो विश्व के सभी कोनों में जाकर रोज़गार, व्यापार आदि के लिए अपनी इच्छानुसार बसे हुए हैं।

इन दोनों वर्गों ने, अपने-अपने तरीकों से, अपने नए निवास-स्थान के परिप्रेक्ष्य में, अपने संस्कारों व अपने मूल्यों के संरक्षण के लिए अथक प्रयास किया है। कहीं सफलता कम मिली है तो कहीं अधिक। परन्तु यह स्पष्ट है कि 'गिरमिटिया देशों' की स्थिति लगभग एक जैसी है। इन सभी को करीब-करीब उन्हीं स्थानों से ले जाया गया था जहाँ इनकी भाषा-संस्कृति व इनका रहन-सहन एक जैसा था और वे अधिक शिक्षित भी नहीं थे। इनके लिए भाषा केवल संपर्क का माध्यम नहीं थी। इनके लिए इनकी भाषा इनकी धरोहर थी जिससे इनका आत्मिक लगाव था और आदर से उसे मातृभाषा कहते थे। इनकी भाषा इन्हें इनके धर्म व इनके इष्टदेव से जोड़ती थी। इनकी भाषा ही इनका सम्मान था।

मॉरीशस भी उसी श्रेणी में आता है। परन्तु यहाँ की बात कुछ अलग है क्योंकि यहाँ पर पूर्व से कोई आबादी नहीं थी और यहाँ बसाए गए लोगों में भारतीय मूल के लोगों की संख्या कोई 70 प्रतिशत रही। स्वतंत्रता के पश्चात भी हमेशा भारतीय वंशज ही प्रशासन सँभालते रहे हैं। अतः भाषा-संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए प्रशासन का भरपूर समर्थन प्राप्त होता रहा है। साथ में, भारत और मॉरीशस के विशेष संबंधों के कारण, इस दिशा में भारत सरकार व भारत की जनता की पूरी सहानुभूति प्राप्त होती रही जो कि शायद अन्य गिरमिटिया देशों के लिए संभव न था।

परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि इन 'गिरमिटिया देशों' में अनगिनत लोगों ने शिक्षक, पंडित-पुरोहित, सभा-संचालक, लेखक व प्रचारक के रूप में हिंदी भाषा को स्थापित करने की दिशा में अपने-अपने देश में, अनूठी सेवा प्रदान की है। आरंभिक काल में, स्वयंसेवी संस्थाओं ने अत्यंत ही सक्रिय भूमिका निभाई है। हिंदी पाठशालाएँ खोली गईं और आज यहाँ प्राथमिक, माध्यमिक तथा तृतीय स्तर पर हिंदी शिक्षण की सुविधा उपलब्ध है। शोधकार्य का भी यहाँ प्रावधान है। भारत और मॉरीशस की सरकारों के सहयोग से यहाँ विश्व हिंदी सचिवालय भी कार्यरत है।

आए दिन धार्मिक अनुष्ठान, प्रवचन, सार्वजनिक कार्यक्रम, तीज-त्योहार, उत्सव इत्यादि का आयोजन रहता है जिसमें हिंदी भाषा का प्रयोग होता है। रेडियो-टेलीविज़न का दैनिक प्रसारण हिंदी में भी प्राप्त होता है। यदा-कदा हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ भी पाठकों को प्राप्त होती रहती हैं। कभी-कभार कुछ साहित्यिक गतिविधियाँ भी होती हैं जैसे कवि-सम्मेलन, प्रतियोगिता, गोष्ठी, वक्तव्य आदि। समय-समय पर हिंदी पुस्तकें भी प्रकाश में आती हैं। अब सूचना प्रौद्योगिकी की भी भरपूर सुविधा उपलब्ध है। इसमें दो राय नहीं कि हर तरफ से हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास जारी है।

फिर भी, हमारे सामने अनेकों चुनौतियाँ भी हैं। सर्वप्रथम, हमें इस बात का एहसास नहीं कि हमको अपनी भाषा के प्रति कहाँ तक प्रतिबद्ध होना चाहिए या हमारे जीवन में हमारी भाषा का क्या महत्व है। इसीलिए अपने दैनिक जीवन में हम या तो अपनी भाषा का प्रयोग ही नहीं करते या फिर कम से कम प्रयोग करते हैं। अपने बच्चों से तो कतई अपनी भाषा में बात ही नहीं करते हैं। सब से भयानक स्थिति यह है कि हमारे बच्चों के लिए हिंदी तो दूसरे लोक की भाषा है। घर पर सभी लोगों को बच्चों के साथ 'क्रियोल' में बात करनी होगी तभी जाकर बच्चा कुछ समझ पाएगा। यहाँ तक की विद्यालयों में, शिक्षक को हिंदी कक्षा चलाने के लिए, 'क्रियोल' का सहारा लेना पड़ता है।

स्कूलों में हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या दिनोंदिन घटती जा रही है। और तो और, अभिभावक शिक्षकों व विद्यालय के अधिकारियों से साफ कह जाते हैं कि हमारा बच्चा हिंदी नहीं पढ़ेगा। वे ही अभिभावक अपने बच्चों को अन्य भाषा व विषय के लिए ट्यूशन पर लाखों रुपए खर्च करते हैं। उन्हें इस बात का विश्वास है कि हिंदी के पीछे समय गँवाने से बच्चे का भविष्य खराब होगा और उन्हें अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए अन्य भाषाओं पर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए। यह एक अत्यंत ही खतरनाक स्थिति है।

हम बहुसंख्यक होते हुए भी एक हिंदी पत्र चलाने में अक्षम हैं। हिंदी पत्र-पत्रिका चलाने की बहुत कोशिश होती रही है। परन्तु सफलता कभी नहीं मिलती है क्योंकि पाठक ही नहीं है। पूर्व में मुद्रण

की पर्याप्त सुविधा हुआ करती थी। परन्तु आज मुश्किल से कोई मुद्रणालय मिलता है जहाँ हिंदी का काम होता हो। अतएव हिंदी प्रकाशन के लिए अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है। कुछ संस्थाएँ अपनी प्रतिष्ठा के लिए अपने कोष से लाखों रुपए खर्च कर अपना एक मुखपत्र चलाती हैं। वह भी उनके कुछ सदस्य पढ़ते हैं।

यहाँ हिंदी लेखकों की स्थिति अत्यंत ही गंभीर है। अपनी भाषा के प्रति प्रेमवश कई लोग अपनी रचना प्रकाशित करवाना चाहते हैं। कठोर परिश्रम के पश्चात जब रचना पूरी हो जाती है तब प्रकाशन का प्रश्न सामने आता है। चूँकि यहाँ पर ऐसी सुविधा उपलब्ध नहीं है, लेखक महोदय को अपने खर्चे पर भारत जाना पड़ता है जहाँ दर-दर की ठोकरें खाकर पुस्तक तो प्रकाशित करवा लेता है परन्तु अपने देश में कोई 10 पुस्तकें भी खपा नहीं पाता है। अंततः प्रकाशक ही खपत का दायित्व लेता है। परिणामस्वरूप, मोरिशस में उस पुस्तक के बारे में और लेखक के बारे में कोई कुछ जानता भी नहीं है।

इन स्थितियों से निपटने के लिए, राष्ट्रीय स्तर पर हमारे दो सुझाव हैं। प्रथम, किसी न किसी संस्था वा प्रशासन द्वारा पूर्व-प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को भाषा से अवगत कराने के लिए, एक विशेष कार्यक्रम का प्रारंभ होना चाहिए। जब तक वहाँ से भाषा का वातावरण पैदा नहीं किया जाएगा तब तक सफलता नहीं मिलेगी। हमारे देश में कोई 1000 सरकारी व निजी पूर्व-प्राथमिक विद्यालय चलते हैं लेकिन इस क्षेत्र के लिए हिंदी भाषा की कोई आधिकारिक योजना नहीं है। प्राथमिक स्तर तक पहुँचते-पहुँचते देर हो जाती है। हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा इस दिशा में कुछ प्रयास तो चल रहा है परन्तु पर्याप्त नहीं है। आर्थिक दृष्टि से संस्था की अपनी सीमा है। ध्यातव्य है कि इस अभियान में हिंदी कार्टून फिल्में काम को अधिक आसान बना देंगी।

हमारा दूसरा सुझाव है कि हिंदी के नाम पर विशेष रूप से ईमानदारी के साथ, सभी संस्थाएँ मिलकर एक मंच कायम करें। अपनी-अपनी गतिविधियों के लिए स्वतंत्र रहें। परन्तु हिंदी के कार्यों के लिए एक अलग योजना तैयार हो जिसमें आर्थिक सहयोग अत्यावश्यक है। तब प्रकाशन, शिक्षण, पत्र-पत्रिका व हर प्रकार से हिंदी प्रचार-कार्य के लिए अलग से कोई ठोस योजना हो। सभी संस्थाओं के प्रतिनिधि मिलकर एक विशेष समिति गठित करें जो सभी योजनाओं के कार्यांवयन पर विशेष ध्यान दे। अलग-अलग कार्य करने से बहुत दूर तक नहीं पहुँच पाएँगे और स्थिति वैसी ही रहेगी जैसी आज है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारा सुझाव है कि, विशेष रूप से 'गिरमिटिया देशों' पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाए। इन देशों में स्थिति अत्यंत ही संवेदनशील है। अपने पैरों पर खड़े होकर कुछ-कुछ तो प्रयास कर रहे हैं। परन्तु लड़खड़ाते-लड़खड़ाते कितनी दूर पहुँच सकते हैं। इन की आवश्यकताएँ अन्य देशों से भिन्न हैं। यहाँ हम उच्च-शिक्षा, विश्वविद्यालय, शोधकार्य या साहित्य-सृजन की बात सोच

शांति निवास,
सुभाषचंद्र बोस मार्ग,
फों जी साक,
शांति निवास,

ही नहीं सकते हैं। मात्र कुछ पुस्तकें दान कर देने से या समय-समय पर वक्तव्य के लिए किसी विद्वान को भेज देने भर से कार्य पूर्ण नहीं होगा।

इन देशों में प्रारंभिक स्तर से कार्य की शुरुआत होनी चाहिए। इन देशों में अधिकतर, देवनागरी के बदले रोमन-लिपि से काम चलाया जाता है। वहाँ शिक्षकों को तैयार करना चाहिए जो जगह-जगह पर हिंदी कक्षाएँ चला सकें। इनके लिए, इनकी आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम व पाठ्य-पुस्तक तैयार होनी चाहिए। प्रत्येक देश की माँग के अनुसार सामग्री तैयार होनी चाहिए। अभी तक किसी ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है। हम लोग बस सभी देशों में एक समान कार्यक्रम चलाते हैं और पिंड छुड़ा लेते हैं और इन देशों को अपने हाल पर रोने के लिए छोड़ दिया जाता है क्योंकि इनकी समस्या का समाधान कभी प्राप्त नहीं होता है। ईमानदारी से इस दिशा में ऊर्जा, साधन व समय का सदुपयोग करना होगा। आधुनिकतम सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

पश्चिम के तीव्र आघातों एवं विश्व के तेज़ी से बदलती संदर्भ के चलते, हिंदी की स्थिति अत्यंत ही नाज़ुक हो गई है। अब मात्र कुछ गतिविधियाँ आयोजित कर देने से काम नहीं चलेगा। अधिक शक्ति व अधिक से अधिक साधन की आवश्यकता है। पर इनसे अधिक ईमानदारी के साथ समर्पण भाव की अति आवश्यकता है। हमें पूरा विश्वास है कि इस मुहिम में सभी का साथ मिलेगा और हम सब कदम से कदम मिलाकर संघर्ष जारी रखेंगे। ईश्वर हमारे प्रयासों को सफल बनाएँ, ऐसी हमारी कामना है।

प्रधान, हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस,
शांति निवास, सुभाषचंद्र बोस मार्ग,
फों जी साक,मॉरीशस
raguttee@mail.gov.mu
hsumauritius@hotmail.com